रंग–बिरंगी मछलियों की देखभाल

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 43–46

रंग–बिरंगी मछलियों की देखभाल

प्रियंका रानी, दिव्यांशु कुमार उपाध्याय एवं डॉ रणजीत सिंह
मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय,
गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
पंतनगर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड, भारत।

Email Id: rsingh75000@gmail.com

ऐक्वेरियम एक पारदर्शी शीशे का जल से भरा डिब्बा है जिसे किसी भी आकार (त्रिकोण, आयताकार, पंचकोण, षटकोण, सप्तकोण, अष्टकोण, दशकोण आदि) का बनाया जा सकता है। ऐक्वेरियम एक जलीय प्राकृतिक सौन्दर्य का विविधीकरण है जिसमे आप एक छोटे से आयत में नदी, झील या समुद्र का सौन्दर्य जीवत रूप में देख सकते है उनका ज्ञान बाँट सकते है और उन्हें संरक्षण भी दे सकते है। विभिन्न आकृति के ऐक्वेरियम जैसे किसी पक्षी, जानवर या संगीत वादन यंत्रों के आकार के साँचों में पिघले काँच द्वारा ढालकर बनाये जा सकतें है। ग्लोब अथवा गोल बाऊल का ऐक्वेरियम भी काफी प्रचलित है।

किसी भी जगह पर एक्वैरियम स्थापित करने से पूर्व इसकी जानकारी, सही देख–भाल तथा रख–रखाव आदि के बारे में जानना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। घरों में एक्वैरियम को रखने की जगह, उद्देश्य आदि व्यक्ति विशेष की रूचि के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

इतिहास

रंग–बिरंगी सजावटी मछलियों को एक्वेरियम में रखने का प्रचलन काफी प्राचीन है। अभिलेखों के अनुसार आदिकाल में मिजोपोटामिया के लोग जिन्हें सुमिरियन्स कहा जाता था, लगभग 4500 वर्ष पहले से मछलियों को तालाबों में पालने के लिए रखते थे। अन्य प्रारंभिक मानवः सभ्यता में एक्वैरियम रखने का शौक एशिया के देशों, चीन, जापान एवं मिश्र के लोगों में होने का उल्लेख है। प्राचीन समय में एक्वेरियम को रखने का उद्देश्य मनोरंजन के साथ इनका प्रजनन करवाकर इन्हें भोजन के रूप में उपयोग करना भी होता था। चीन देश में छोटे–छोटे पात्रों में अलंकारिक मछलियों को रखकर उनका प्रजनन कराने की विधि का विकास किया गया, इसका एक प्रमुख उदाहरण गोल्ड फिश है। 'एक्वेरियम' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फिलिप गूज (1810– 188) नामक ब्रिटिश वैज्ञानिक ने अपने कार्यों में किया। विश्व का प्रथम सार्वजनिक एक्वैरियम 1853 में रीजेन्ट पार्क, लन्दन में खोला गया, उसके बाद बर्लिन एवं पेरिस में इस तरह के एक्वेरियम बनाये गए। भारतवर्ष में एक्वैरियम एवं सजावटी मछलियों को रखने का शौक लगभग सात दशक पुराना है। ब्रिटिश शासन के दौरान बाहर से लाई गयी रंग–बिरंगी मछलियों के देश में प्रवेश के बाद यह और लोकप्रिय हुआ।

एक्वैरियम की स्थापना

एक्वैरियम को एक जगह विशेष पर स्थापित करने से पूर्व कुछ बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए जगह का सही चयन कर लेना आवश्यक है। क्योंकि एक बार इसमें पानी भर देने के बाद इसकी जगह में परिवर्तन

करना मुश्किल होता है, साथ ही टूटने का भी भय रहता है। ऐसा स्थान उपयुक्त है जहाँ से एक्वैरियम सीधे आँखों के सामने दिखे। इसे जमीन से करीब 3 फुट की ऊंचाई पर टेबल आदि पर रखना उचित है। एक्वैरियम के नीचे एक इंच मोटी थर्मोकोल की शीट रखना आवश्यक है, इससे एक्वैरियम के नीचे की तरफ लगे काँच की सुरक्षा भी हो जाती है। घर में जहाँ सीधे सूर्य की किरणें न पड़ती हो, एक्वैरियम रखने के लिए उचित स्थान माना जाता है। एक्वैरियम में शैवाल का जमाव न हो इसके लिए धुंधले प्रकाश वाले स्थान का चयन करना चाहिए।एक्वैरियम बैठक वाले कमरे में ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहाँ घर में प्रवेश करने के बाद आगन्तुकों की प्रथम दृष्टि उस पर पड़े. इससे बैठकरूम की शोभा भी बढ़ती है।

एक्वैरियम मछलियों में आपसी सामन्जस्य

खाने की आदतों एवं मछलियों के व्यवहार को ध्यान में रखते हुए एक साथ अनेक प्रजातियां नहीं पाली जा सकती है। सामान्यतः यह शिकायत रहती है कि मछलियों आपस में काफी लड़ती है जिससे उन्हें चोट लग जाती है और उनकी मृत्यु होने लगती है। अतः टैंक में सही आकार एवं प्रजातियों के चयन से मछलियों के बीच का आपसी सामन्जस्य बना रहता है। निम्न तरह से विभिन्न प्रजातियों की मछलियों में सामान्जस्य बनाए रखा जा सकता है:

प्रथम सेटः कीमेट को छोड़ सभी तरह की गोल्ड फिश (औरन्डा, शुबुनकिन, फैनटेल, रेडकैप, ब्रिस्टल रेड, लायन हेड, कैलिको आदि) छोटी टाइगर या सिल्वर शार्क के साथ।

द्वितीय सेटः गप्पी, मोली, सोईटेल, प्लेटी, बिडोटेट्रा, टाइगर बार्य (छोटी), चन्दा (ग्लास फिश), जेब्रा डानियो, मध्यम आकार की रोजी बार्ब छोटी ऐन्जेल्स एवं कुछ लोचेस।

तृतीय सेटः कोई कार्पस (एक, दो, तीन रंग की कोई), टाइगर शार्क, बड़ी ऐन्जेल्स टाइगर बार्ब एवं गोरामी।

चतुर्थ सेटः टेट्राज जैसे– सर्प, टेट्रा, निओन टेट्रा, डाइमन्ड टेट्रा, लाल आँख वाली टैट्रा, बार्ब जैसे टाइगर बार्ब, रोजी बार्ब एवं टिनफोइल बार्ब ।

पंचम सेटः सभी तरह की डिसकस, ऐन्जेल्स, फेदर फिश एवं लोच।

छठा सैटः रेनबो किसिंग, गोल्डन, नील गोरामी आदि, छोटी एवं बराबर आकार की चिचलिड्स ।आकार, खाने की आदतें, व्यवहार एवं कई अन्य तरह का आपसी सामन्जस्य, मछलियों की उपलब्धता के अनुसार बनाया जा सकता है।

उपयुक्त आहार का चयन

रंगीन मछलियों की दुकाने जिन्हें ''पेट शौप'' के नाम से भी जाना जाता है. में कई किस्म के आहार उपलब्ध रहते हैं। खरीदने से पूर्व आहार के बनने एवं इसकी एक्सपाइरी तिथि को देख लेना चाहिए। घरेलू एक्वेरियम में दिन में केवल एक बार खाना देना चाहिए, इससे उनका स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। अधिक भोजन की अपेक्षा कम भोजन देना हमेशा लाभप्रद होता है। आहार देने के बाद एक्वैरियम में खाद्य–अवशेष नहीं रहने चाहिए। यदि ट्यूबीफिक्स आदि जीवित भोजन देना हो तो छिद्र वाले कप को एक्वैरियम ग्लास के आगे की तरफ रख कर प्रयोग किया जा सकता है। सही गुणवत्ता के सूखे ट्यूबीफिक्स एवं डेफनिया पाउडर भी भोजन के रूप में उपयोग किये जा सकते हैं।

एक्वैरियम में नयी मछली का प्रवेश

नयी मछली को खरीदने के पश्चात तथा अपने एक्वैरियम में डालने से पूर्व एक अलग टैंक में लगभग 2 सप्ताह तक रखना चाहिए। इन मछलियों के स्वास्थ्य

एवं इनके घूमने–फिरने की आदतों को देख कर इनकी जांच की जा सकती है। यदि 2 सप्ताह तक कोई रोग आदि न दिखे तो इन्हें स्वस्थ एवं अभ्यस्त मान कर एक्वैरियम में डाला जा सकता है। कुछ सप्ताह तक इनकी नियमित देखभाल करनी चाहिए जिससे यह पता लग सके कि परिवेश–परिवर्तन का इन मछलियों पर कोई असर तो नहीं हुआ है। कभी–कभी नयी मछलियों के आने से एक्वैरियम की पुरानी मछलियाँ डरी–डरी एवं सहमी सी रहती हैं और किनारों पर छिपती–फिरती हैं. परन्तु यह समस्या धीरे–धीरे दूर हो जाती है।

मछलिओं की बीमारियों का उपचार

कभी–कभी यह देखा गया है कि एकोरियम में अधिक पानी भरने से या गलत भोजन 'देने से कई तरह के रोगाणु बीमारियां फैलाते है। ऐसी अवस्था में सर्वप्रथम समस्या के कारणों का पता लगाना बहुत जरूरी है। यदि कोई मछली मर जाए अथवा बीमार दिखायी दे तो बीमारियों के लक्षणों को ध्यान से देखना चाहिए। इसे संदर्भ में रोग से संबंधी निर्देशिका का भी सहारा लिया जा सकता है। यदि मछली बिना किसी लक्षण के तुरंत मस्ती हो तो पानी की गुणवत्ता की जांच करा लेनी चाहिए. यदि संभव हो तो पानी का बदलाव भी किया जा सकता है। बहुत अधिक मछलियां कम समय के अंतराल पर यदि मर रही हो तो दिन के कारण भी यह समस्या हो सकती है। इसके अतिरिक्त अधिक खाना देने अथवा अन्य विषैले पदार्थों (डिटर्जेन्ट, फलाई को आदि) का टैंक में प्रवेश करने से भी ऐसा हो सकता है। अतः ऐसी समस्या उपस्थित होने पर सभी मछलियों को साफ पानी में डाल देना चाहिए।

यदि मछलियाँ बिना किसी विशेष बीमारी के प्रतिदिन अथवा 2–3 दिन के अंतराल में मर रही हो तो ऐसी स्थिति में बीमारी होने की आशंका प्रबल हो जाती है। मछलियों का रंग यदि सामान्य से हल्का हो और बीमारी का कोई लक्षण न दिखायी पड़े तो पानी की जांच कर लेनी चाहिए। पानी का बदलाव कर उसमें ब्रोड स्पेक्ट्रम एन्टी फन्गल दवाई का प्रयोग करना चाहिए।

एक्वैरियम की देखभाल

- मछलियों की नियमित देखभाल करते रहने से इनके अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में आसानी होती है। अन्य पालतू जानवरों की तुलना में एक्वैरियम के लिए प्रतिदिन बहुत कम ध्यान देने की जरूरत होती है। यदि एक्वैरियम में जीवित पेड़–पौधे न हो तो बल्व के प्रकाश की जरूरत भी नहीं पड़ती है। यह केवल भोजन देने के समय एवं मछलियों को देखने के लिए प्रयोग किया जाता है।
- यदि आप घर से बाहर एक–दो दिन से लेकर एक सप्ताह तक जा रहे हो तब भी मछलियाँ केवल आहार बिना नहीं मरेगी, इन्हें इससे और भी अधिक दिनों तक बिना भोजन के रखना संभव है। परन्तु यदि संभव हो तो सप्ताह में एक बार भोजन, जिसे ""सम्पोषण आहार" भी कहते है, दिया जा सकता है।
- किसी भी स्थिति में सुन्दर पत्तियों वाले पौधों को एक्वैरियम में रखना एक सही कदम माना जा सकता है जैसे हाइड्रिला, कैबोम्बा आदि, क्योंकि मछलियाँ जब भूखी होती हैं तो इन पौधों पर चिपके जैविक आहार को कुरेदती है।
- एक्वैरियम में पाली जाने वाली अधिकतर मछलियों को दिन में दो या तीन बार भोजन दिया जाता है। एक बार में इतना ही भोजन देना चाहिए जो पाँच मिनट के अंदर समाप्त

हो जाए तथा इसका अवशेष न बचे, इसके लिए थोड़ी अभ्यास की जरूरत पड़ती है।

- सामान्य परिस्थितियों में एक्वैरियम का पानी धुंधला, गंदा अथवा दुर्गन्ध वाला नहीं होता पानी के मंदलापन के लिए अधिक आहार का प्रयोग एक प्रमुख कारण है। एक्वैरियम में सड़े हुए कार्बनिक पदार्थ (बचा हुआ आहार) के जमाव से अमोनिया की पाप आती है। ऐसी अवस्था में पानी का शीघ्र बदलाव नितांत आवश्यक है और यह भी जांच करनी जरूरी है कि मछलियाँ तनाव ग्रस्त तो नहीं हुई।
- पम्प फिल्टर, हीटर (थर्मोस्टेट) जो एक्वैरियम में स्थापित किये जाते हैं, एक जीवन रक्षक प्रणाली की तरह काम करते हैं। जाड़ो के महीनों में एक बार थर्मोस्टेट पर नजर अवश्य देनी चाहिए, विशेषकर आहार देने के समय तापमान में बहुत अधिक बदलाव तनाव पैदा कर बीमारी की आशंका को बढ़ाता है।
- रंगीन पत्थरोंध गिट्टीयों/चिप्स/प्राकृतिक पत्थरों (1–2 सेमी.) आदि को पानी से तब तक साफ करते रहना चाहिए जब तक कि इनको दोबारा धोने से पानी का रंग साफ न हो जाए। डिटर्जेन्ट आदि का प्रयोग सफाई के लिए वर्जित हैं। एक्वैरियम को सफाई के बाद खूब घूप में सूखा कर ही प्रयोग में लाना चाहिए।

एक्वेरियम में रहने वाली मछलियों की प्रजातियां

शिशुमीनों को जन्म देने वाली प्रजातियाँः

इस तरह की मत्स्य प्रजातियों सीधे छोटी मीनों को जन्म देती है। प्रचलित प्रजातियों में सोर्डटेल, ब्लैक मोली, प्लेटी, गप्पी आदि प्रमुख हैं।

गप्पीजः राउण्ड टेल, स्पीयर टेल, फैन टेल, बैल टेल, पिनटेल, कौबरा गप्पी, सिंगापुर गप्पी आदि।

मोली : सेल फिन मोली ब्लैक मोली, मून टेल, राउण्ड टेल, चाकलेट मोली, सिल्वर मोली, ऑरेन्ज मोली, बैलुन मोली आदि

सोर्ड टेल रेड सोर्ड टेल, ग्रीन सोर्ड टेल, सनसेट सोर्ड टेल, टॉक्सीडो टेल, डबल सोर्ड टेल आदि।

अंडा देने वाली प्रजातियाँः

इस क्रम में ऐसी मछलियां आती है जो प्रजनन काल मे पानी के अन्दर अण्डा देती है। नर मछली के शुक्राणु अण्डे के ऊपर आते है। कुछ समय का कवच टूट जाता है और छोटा सा लारवा अण्डे से बाहर निकलता है। इसके बाद ये स्वतंत्र विचरण करने लगते है।

गोल्ड फिशः लायन हेड, पेल टेल, फिन्ज तेल, टेलीस्कोप आई, कैलिको गोल्ड, पिकौक–टेल, रेडकैप, पर्ल स्केल आदि

बार्ब : रोजी बार्ब,, टाइगर बाब

टेट्राजः ब्लैक विडो टेट्रा, निओन टेट्रा, सर्प

गेरामी : नीली गोरामी, गोल्ड गोरामी, पर्ल गोरामी, मूनलाइट गोरामी (ज. उपबतवसमचपे). किसिंग गोरामी

रंगीन मछलियों के विषय में अतिरिक्त जानकारी

- अधिकांश सजावटी मछलियों में नर, मादा की अपेक्षा अधिक सुन्दर लगते हैं। नर के रंग, पंखों की बनावट तथा विशेष आकार इसका कारण है।
- यदि मछली लाईबबियरर है और मादा का पेट फूला हुआ है, तो शिशुमीन पैदा किये जा सकते हैं। सोर्डटेल मछली में लिंग परिवर्तन देखा जाता है।
- अधिकांश रंगीन मछलियां अपने अण्डे या बच्चों को खा जाती है। इसका कारण है कि अण्डा या बच्चा देते समय मछली की काफी उर्जा नष्ट हो जाती है या फिर मछली को डर की भावना रहती है कि अन्य मछलियाँ इन्हें न खा जाय।